अहमदाबाद-गुज.। राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी,क्षेत्रीय संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़ को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स,लंदन द्वारा लॉकडाउन में कोरोना महामारी के दौरान मानवता के लिए लोक कल्याण में अपना अमूल्य योगदान देने हेतु 'सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट' स्वीटज़रलैंड से सम्मानित किया गया।
वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स,लंदन के राष्ट्रीय सचिव डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके और ओम शान्ति मीडिया के संपादक राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर ने राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी को सुख-शांति भवन,अहमदाबाद में 'सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट' स्वीटज़रलैंड प्रमाण पत्र से सम्मानित किया। इस अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. दमयंती दीदी,अति.क्षेत्रीय संचालिका, राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी,मेहसाणा, राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. नेहा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. नंदिनी दीदी समेत क्षेत्र के अन्य वरिष्ठ भाई-बहनें उपस्थित रहे।

शांतिवन। कारीगरों की सेवा के लिए विश्वकर्मा ग्रुप ऑफिस का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी। साथ हैं ब्र.कु. भूपाल भाई, ब्र.कु. संतोष दीदी, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

एवररेडी होने के लिए पहले... रेडी हो जाओ

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

अगर आपकी बाबा से बात हुई नहीं, उससे सर्व सम्बन्धों का रसास्वादन किया नहीं तो समय गुजरता जा रहा है। यह मुख्य वस्तु आपको प्राप्त हुई नहीं तो बाकी उपलब्धि जीवन में क्या हुई? जिसको गोप-गोपियों का अतीन्द्रिय सुख कहा जाता है, जिसको भगवान के अंग-संग रहना कहा जाता है, प्रभु मिलन कहा जाता है, वह मिलन क्या होता है, उसका आनन्द हमने लिया नहीं, तो हम एवररेडी कैसे रहेंगे? क्या पहले हम रेडी हैं? कोई पूछता है कि क्या आप तैयार हैं? कहते हैं, हाँ तैयार हैं। लेकिन कई लोग, तैयार हैं, यह कहने के बाद बाहर आने के लिए 15 मिनट लेते हैं। ऐसे तो नहीं कि समझ बैठे हैं अपने आपको रेडी लेकिन और कई काम बाकी हैं? हम बाबा से वर्सा लेने के हकदार हैं लेकिन तब जब हमारे सारे पुराने संस्कारों का परिवर्तन हो। सारे संस्कार परिवर्तन हो सकते हैं अगर आप अपने मन को भगवान को समर्पित कर देंगे। आपने तो जान लिया कि परमात्मा कौन है लेकिन आपसे वह क्या चाहता है, यह जान लिया?

भगवान के प्रति हमारी क्या प्रतिक्रिया है?

हमारा उद्देश्य, हमारा मूलमन्त्र है, 'पवित्र बनो, योगी बनो'। हम इस स्लोगन को सब जगह सेन्टरों और अपने-अपने घरों में लगाते हैं। परमात्मा के मन में हमारे लिए क्या है? वह किस लिए इतनी दूर से आया है? बाबा हमें इतना प्यार करता है, कहता है कि बच्चे, तुम मेरे सिरताज हो, मेरे गले का हार हो। तुम सिकीलधे बच्चों को मैं पलकों पर बिठाकर ले जाऊंगा। इतनी ज़िम्मेवारी लेता है। कहता है, तुम मेरे कुल के चिराग हो, मेरे नूरे रत्न हो, ब्राह्मण कुलभूषण हो, मेरे घर का श्रृंगार हो। इतना हमको कहता है, इतना प्यार करता है, अरे हमें उसकी बातें समझ में ही नहीं आ रही हैं! कोई हमें इतना प्यार करता जाये, इतना करता जाये तो हमारी प्रतिक्रिया क्या है? क्या हमारे में यह अंतर्ध्वनि नहीं आती कि हम कितने निष्ठुर व्यक्ति हैं! कितने पत्थर दिल हैं! वो हमारे लिए परमधाम से आता है और हम वह भी नहीं कर सकते जो वह कहता है! योगी बनो, योगी बनो, योगी बनो लेकिन क्या हम योगी बन रहे हैं? पवित्र भी कहाँ तक बन रहे हैं? पवित्रता का स्तर और मापदण्ड जो बाबा ने बताया हुआ है, पवित्रता की जो परिभाषा बाबा ने दी हुई है, पवित्रता शब्द का जो विस्तृत अर्थ है, जिसे हमें ख्याल में रखना है, उस दृष्टि से आप अपने को देखें, फिर सोचें कि हम कहाँ तक पवित्र बने हैं। अगर ये सब अनुभव हमने नहीं किये तो कैसे एवररेडी हो पायेंगे?

मैं कह रहा था भगवान से बात करने के बारे में। मैं यह पूछता हूँ कि कौन है जो भगवान से बात करना नहीं चाहता होगा? भगवान के साथ साजन-सजनी के रूप में, सखा-सखी के रूप में, मित्र-मित्र के रूप में, बन्धु-बान्धव के रूप में या पिता-पुत्र के रूप में या माता-पुत्र के रूप में कौन हैं बात करना नहीं चाहते? कहते हैं कि हरेक बात में कुछ अपवाद होते हैं। लेकिन इसमें कोई अपवाद या छूट नहीं हो सकती क्योंकि हम यहाँ आये ही हैं यह करने के लिए। क्या आप यह जानते हैं, परमात्मा से हम बातें कैसे कर सकते हैं? उससे मिलन हम कैसे मना सकते हैं? अलग-अलग सम्बन्धों का अनुभव कैसे कर सकते हैं? अगर ये सब अनुभव हमने नहीं किये हैं तो हम कैसे एवररेडी हो पायेंगे? इसके लिए अभ्यास की ज़रूरत है।

पवित्रता का स्तर और मापदण्ड जो बाबा ने बताया हुआ है, पवित्रता की जो परिभाषा बाबा ने दी हुई है, पवित्रता शब्द का जो विस्तृत अर्थ है, जिसे हमें ख्याल में रखना है, उस दृष्टि से आप अपने को देखें, फिर सोचें कि हम कहाँ तक पवित्र बने हैं। अगर ये सब अनुभव हमने नहीं किये तो कैसे एवररेडी हो पायेंगे? तो पहले हमें स्वयं को स्वयं में पवित्रता की पात्रता को अपनाकर रेडी करना होगा।

बाबा ने कई दफा कहा है कि एवररेडी रहो। एवररेडी बनने के लिए कई बातें और भी हैं जिनमें सबसे पहले हमें यह सोचना चाहिए कि क्या हमारे संस्कार बदले हैं? क्या हमारा व्यवहार बदला है? ज्ञान की जो गहराई है उसे हमने समझा है? क्या योग की जो विविध स्टेजिस हैं, उन स्टेजिस की हमने अनुभूतियाँ की हैं? ऐसी स्टेज हमारी है कि बाबा जहाँ बिठाये, जैसे बिठाये, जो खिलाये, जो पहनाये? उसका जो भी फैसला हो, वह हमें मंजूर है? अभी तक किन-किन गुणों का विकास हमारे में नहीं हुआ है? जिस स्टेज में हम स्थित होना चाहते हैं, उस स्टेज पर तुरन्त स्थित हो सकते हैं? अगर उत्तर 'हाँ' में है तो हम कह सकते हैं कि हम एवररेडी हैं। यह सोचने की और ध्यान देने की बात है। सोचना माना चिन्ता करना नहीं परन्तु बाबा कहते हैं कि बच्चों को ओना, फुरना रहना चाहिए। हमें आध्यात्मिक साधना करने की सात्विक चिन्ता रहनी चाहिए।

अभी समय कितना रह गया है! उसमें भी हम कितना समय व्यर्थ गंवाते हैं! संगमयुग की परम उपलब्धियों को छोड़कर छोटी-छोटी बातों में उलझे रहना, अटके रहना अच्छा नहीं है। दिन कट रहे हैं, हम तेरे-मेरे में लगे हुए हैं। इसलिए मैं समझता हूँ कि एवररेडी बनने के लिए 'योगी बनो और पवित्र बनो' के प्रैक्टिकल स्वरूप में हमें रहना है।

जशपुर नगर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कोरोना वॉरियर्स के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में विधायक विनय भगत, कलेक्टर महादेव कावरे, एस.पी. विजय अग्रवाल सहित सभी मेडिकल स्टाफ, रॉनियार क्लब, महिला शक्ति, सजल समूह, एरॉबिक ग्रुप, चाइल्ड डेवलपमेंट ग्रुप, पुलिस आदि को ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. अनुपमा, ब्र.कु. श्वेता, ब्र.कु. डॉ. पी. सुथार द्वारा सम्मानित किया गया।

जम्मू। सेशन जज सुरेश शर्मा एवं श्रीमति शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुदर्शन दीदी तथा ब्र.कु. डॉ. बिन्नी,पीस एम्बेसडर,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. रविन्दर भाई तथा अन्य।

अम्बिकापुर-छ.ग.। जन्माष्टमी पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजमोहिनी देवी कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता वी.के. सिंह, कार्य पालन अभियन्ता जल संसाधन संभाग बैकुण्ठपुर सुरेन्द्र दुबे, सरगुजा संभागीय उद्योग संघ महासचिव बी.एस. सिंह कटलरिया तथा सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी।